कौशल विकास के माध्यम से आत्मनिर्भर व विकसित भारत: पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का विश्लेषण

डॉ. सुनीता सहायक[1], अंकित जम्वाल[2]

[1]आचार्य, [2]शोधार्थी
दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला.

शोधसार :-

आज भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां आत्मनिर्भरता और विकसित भारत के बीच में कौशल विकास एक मुख्य कड़ी बनकर उभरा है। वर्तमान केंद्र सरकार द्वारा आयोजित आत्मनिर्भर भारत अभियान, कौशल विकास योजना, व स्टार्टअप इंडिया जैसी अनेकों योजनायें, महज सरकारी योजनायें नहीं हैं बल्कि एक वैचारिक आन्दोलन है, जिसकी जड़ें पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद में गहराई से जुड़ीं हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद विकास का एक ऐसा दर्शन है जो केवल आर्थिक प्रगति पर नहीं बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक व नैतिक मूल्यों पर आधारित है। उनका मानना था कि "राष्ट्र का निर्माण, व्यक्ति के निर्माण से होता है।" व्यक्ति निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा व कौशल विकास है। भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKY), दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना(DDU- GKY), स्किल इंडिया मिशन, व राष्ट्रीय कौशल विकास निगम(NSDC) जैसी योजनाएं उनके इसी विचार को साकार करती हैं।

संकेत शब्द :- कौशल विकास, आत्मनिर्भर भारत, विकसित भारत, व्यक्ति निर्माण, वैचारिक आन्दोलन

प्रस्तावना :-

भारत सदैव से ही एक सांस्कृतिक राष्ट्र रहा है, जहाँ विकास की अवधारणा केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं रही बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास को प्राथमिकता दी गयी। आजादी के बाद देश ने अनेकों योजनाओं और नीतियों के माध्यम से आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन का प्रयास किया किन्तु इन प्रयासों में बहुदा भारतीय चिंतन की उपेक्षा हुई। ऐसे में उस समय के महान विचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय समाज के लिए एक वैकल्पिक विकास मॉडल प्रस्तुत किया जिसे उन्होंने "**एकात्म मानवदर्शन**" कहा। इस दर्शन में व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व प्रकृति के बीच संतुलन को केंद्र में रखा गया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि राष्ट्र की प्रगति तब तक अधूरी है जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति तक सम्मान, अवसर व संसाधन नहीं पहुँचते। इसी विचारधारा से प्रेरित होकर

वर्तमान भारत सरकार द्वारा बहुत सी ऐसी कौशल विकास योजनाओं का आरम्भ किया गया है, जो न केवल युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने का माध्यम है बल्कि भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में पहुँचाने का आधार भी है।

आज जब भारत 2047 तक **"विकसित भारत"** के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है, तब यह आवश्यक है कि नीति निर्धारण केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित न रहकर सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों से भी जुड़ा हो।कौशल विकास के माध्यम से देश का युवा वर्ग न केवल रोजगार योग्य बन रहा है, बल्कि वह आत्मगौरव, आत्मविश्वास और सामाजिक सहभागिता से भी जुड़ रहा है। इस सन्दर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर रहा है।

विषय :-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का समग्र चिंतन "एकात्म मानववाद" पर आधारित है, जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और प्रकृति के मध्य संतुलन को विकास का मूल आधार मानता है। उनके अनुसार, भारत की आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक संसाधनों पर नहीं, बल्कि उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पारम्परिक ज्ञान परम्परा और जनशक्ति की सामूहिक चेतना पर टिकी है। दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था, "हर व्यक्ति में शक्ति है, उस शक्ति को जागृत करना ही राष्ट्र निर्माण का मार्ग है।" उनका मानना था कि राष्ट्र निर्माण केवल आधारभूत संरचना खड़ी कर देने से नहीं होता, बल्कि इसके लिए व्यक्ति निर्माण आवश्यक है। व्यक्ति के दो प्रमुख आधार हैं, पहला शिक्षा व दूसरा कौशल विकास। कौशल विकास वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को जीवनोपयोगी कार्यों के लिए दक्ष बनाती है और उसे आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करती है। यह विचारधारा दर्शाती है कि आज कौशल विकास मात्र श्रमिक तैयार करने की प्रक्रिया न होकर नवाचार, नेतृत्व क्षमता और समस्याओं के रचनात्मक संसाधनों की योग्यता विकसित करने का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। कौशल विकास के माध्यम से युवा न केवल पारंपरिक क्षेत्रों में, बल्कि नवीन तकनीकों, डिजिटलीकरण, ग्रीन टेक्नोलॉजी और सेवा क्षेत्र जैसे उभरते क्षेत्रों में भी अपने कदम मजबूती से जमा रहे हैं। भारत के सामाजिक व आर्थिक विकास में कौशल विकास एक निर्णायक भूमिका निभा रहा है। वर्तमान केंद्र सरकार द्वारा चलाये जा रहे आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत जब **"वोकल फॉर लोकल"** का आह्वान किया गया, तो उसका मूल आधार एक सक्षम , प्रशिक्षित और आत्मविश्वासी भारत ही था। आज देश भर में संचालित विभिन्न योजनाएं युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान क्र उन्हें रोजगार, स्वरोजगार और उद्यमिता के योग्य बना रही हैं। इन सभी प्रयासों की वैचारिक पृष्ठभूमि पंडित दीं दयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद में निहित है, जो व्यक्ति और समाज के समन्वयपूर्ण विकास पर बल देता है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय कहते थे कि यदि भारत की आत्मा को समझना है तो उसे राजनीति अथवा अर्थ-नीति के चश्मे से न देखकर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही देखना होगा। विश्व को भी यदि हम कुछ सिखा सकते हैं तो उसे अपनी सांस्कृतिक सहिष्णुता एवं कर्तव्य प्रधान की भावना की ही शिक्षा दे सकते हैं, राजनीति अथवा अर्थनीति की नहीं। विकास की अवधारणा को यदि भारतीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो उसमें समावेशिता, नैतिकता और सामाजिक संतुलन आवश्यक तत्व बन जाते हैं। आत्मनिर्भरता का भी यही अर्थ है कि हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों और परम्पराओं के अनुरूप अपने संसाधनों, ज्ञान और कौशल का उपयोग कर स्वयं निर्णय लेने और समाधान खोजने की क्षमता विकसित करें। आज जब भारत **"आत्मनिर्भर"** व **"विकसित भारत"** बनने की ओर अग्रसर है, तब

यह आवश्यक हो जाता है कि अपनी नीतियों, योजनाओं और विकास के मार्गों को अपनी सांस्कृतिक दृष्टि से परखें। यदि हम केवल भौतिक विकास को ही सफलता का मानक मान लें व अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कट जाएँ, तो यह आत्मनिर्भरता खोखली सिद्ध होगी। आत्मनिर्भर व विकसित भारत की कल्पना तभी साकार होगी जब उसमे भारतीयता की आत्मा, कर्तव्यबोध और सहिष्णुता की भावना समाहित होगी।

दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि यह भी आवश्यक है कि हम आर्थिक क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर बने। यदि हमारे कार्यक्रमों की पूर्ती विदेशी सहायता पर निर्भर रही तो वह आवश्य ही हमारे ऊपर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से बंधनकारक होगी। उनका सपष्ट विचार था कि यदि किसी राष्ट्र की आर्थिक नीतियाँ व कार्यक्रम विदेशी सहायता या अनुदान पर आधारित होंगे, तो वह राष्ट्र कभी वास्तविक स्वतंत्रता का अनुभव नहीं कर पायेगा। विदेशी सहायता चाहे कितनी भी लाभप्रद क्यों ना हो, वह अंततः किसी ना किसी रूप में दबाव, शर्तों और प्रतिबद्धताओं को जन्म देती है, जो राष्ट्र की नीतिगत स्वतंत्रता को सीमित कर सकती है। उनके विचारों में आर्थिक आत्मनिर्भरता केवल उत्पादन या व्यापार तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह राष्ट्रीय स्वाभिमान, निति-निर्धारण की स्वतंत्रता और दीर्घकालिक स्थायित्व से भी जुडी हुई थी। उन्होंने भारतीय समाज की आवश्यकताओं, संसाधनों और परम्परागत ज्ञान के अनुरूप ऐसे आर्थिक ढाँचे की कल्पना की थी जो स्थानीय स्तर पर मजबूत हो, जिसमे गाँव, कुटीर उद्योग, स्वदेशी तकनीक और श्रमशीलता को प्राथमिकता दी जाए। दीनदयाल उपाध्याय मानते थे कि यदि भारत को सशक्त बनाना है, तो उसकी योजनाओं की नींव देश के अपने संसाधनों, उद्यमों तथा श्रमबल पर आधारित होनी चाहिए। आर्थिक परावलंबन न केवल आत्मविश्वास को कमज़ोर करता है, बल्कि नीति निर्माण में भी संप्रभुता को प्रभावित करता है। इसीलिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भी इसी बात पर जोर दिया कि भारत को अपने विकास के मार्ग में स्वयं आत्मनिर्णय लेना होगा और ऐसा केवल तभी संभव है जब आर्थिक क्षेत्र में भी पूर्ण आत्मनिर्भरता को लक्ष्य बनाया जाए। उनकी यह सोच आज के भारत के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ वैश्विक प्रतिस्पर्धा में टिके रहने के लिए न केवल आर्थिक विकास की गति तेज़ करनी है, बल्कि विकास का चरित्र भी भारतीय मूल्यों और आत्मनिर्भर सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। यही आत्मनिर्भरता भारत को न केवल **"विकसित राष्ट्र"** बनाएगी, बल्कि "**वैश्विक नेतृत्व**" की भूमिका में भी स्थापित करेगी। आज आवश्यकता है कि गाँव-गाँव में छोटे-छोटे उद्योग स्थापित किये जाएँ। दीनदयाल उपाध्याय का कथन था कि यदि हम अपने ही गाँव में सूत कातें, बर्तन बनायें, कृषि यंत्र बनायें, तथा ग्रामीण कौशल का विकास करें, तो ना हमें रोजगार के लिए शहर भागना पड़ेगा, और ना ही हमें विदेशी वस्तुओं पर आश्रित रहना पड़ेगा। स्वावलंबन ही राष्ट्र को महान बनता है। आत्मनिर्भर भारत का सपना तभी साकार होगा जब हमारे गाँव भी आर्थिक दृष्टि से सक्षम बनेंगे। उनका मानना था कि जब तक गाँवों की आर्थिक रीढ़ मजबूत नहीं होगी, तब तक सम्पूर्ण देश की प्रगति अधूरी रहेगी। गाँवों में छोटे उद्योगों की स्थापना, स्थानीय संसाधनों का उपयोग और पारंपरिक कौशल का आधुनिकीकरण आदि, यह सभी पहलू विकसित भारत की ओर बढ़ने की अनिवार्य सीढियाँ हैं। जब गाँव में ही रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे, तब शहरों की ओर पलायन रुकेगा और ग्रामीण समाज में स्थायित्व आएगा। यह न केवल सामाजिक संतुलन को बनाये रखेगा, बल्कि शहरी क्षेत्रों पर पड़ने वाले आर्थिक दबाव को भी कम करेगा। विकसित भारत केवल उच्च तकनीक, बुलेट ट्रेन, और स्मार्ट शहरों का नाम नहीं है, बल्कि वह भारत है जहाँ हर गाँव डिजिटल रूप से सशक्त, आर्थिक रूप से स्वतंत्र, व सांस्कृतिक रूप से गौरवशाली हो। यदि हम गाँव को विकास की मुख्यधारा से जोड़ दें, तो शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, और बुनियादी ढांचे का विस्तार वहां भी उसी गति से होगा, जैसा शहरों में होता है। इससे न केवल जीवन स्तर सुधरेगा, बल्कि देश में उत्पादकता भी बढ़ेगी। आत्मनिर्भर

गाँवों के माध्यम से ही विकसित भारत की नींव सुदृढ़ हो सकती है, जहाँ प्रत्येक नागरिक को समान अवसर व सम्मान प्राप्त हो। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन भारतीय राष्ट्र जीवन के सांस्कृतिक मूल्यों और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों पर आधारित था। उनके एकात्म मानववाद में जीवन के प्रत्येक पक्ष – आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और संस्कृति का समन्वय था। उन्होंने कहा था कि देश की आर्थिक समृद्धि ही अब हमारा लक्ष्य हो गया है। उनके विचारों में आर्थिक आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, दोनों ही विकसित भारत की नींव के रूप में उभरते हैं। विकसित भारत की कल्पना केवल उच्च तकनीक, शहरीकरण और सकल घरेलु उत्पाद में वृद्धि तक सीमित नहीं हो सकती। दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार, यदि विकास व्यक्ति, समाज, और राष्ट्र सांस्कृतिक आत्मा से जुड़ा नहीं है, तो वह केवल आर्थिक समृद्धि बनकर रह जायेगा। इसीलिए आत्मनिर्भर भारत का विचार, उनकी दृष्टि में, एक ऐसा राष्ट्र है जो न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो, बल्कि सांस्कृतिक रूप से जागरूक और आत्मगौरव से परिपूर्ण हो।

आज जब भारत **"विकसित भारत @2047"** के लक्ष्य की ओर तीव्र गति से अग्रसर है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि हमारे नीति-निर्माण की दिशा केवल आर्थिक आंकड़ों तक सीमित न रहकर उसमे सामाजिक समावेश, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्य भी अंतर्निहित हों। भारत का युवा वर्ग इस परिवर्तन का प्रमुख वाहक बनकर उभरा है, जिसे कौशल विकास के माध्यम से नये अवसरों की ओर अग्रसर किया जा रहा है। यह प्रक्रिया केवल रोजगार प्राप्त करने तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मविश्वास,आत्मगौरव, और राष्ट्र निर्माण में भागीदारी की भावना को भी सुदृढ़ कर रही है। इसी दिशा में वर्तमान भारत सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएं जैसे प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना(DDU- GKY), स्किल इंडिया मिशन, व राष्ट्रीय कौशल विकास निगम(NSDC) एक समग्र प्रयास का संकेत देती हैं। इन योजनाओं में तकनीकी प्रशिक्षण, डिजिटलीकरण , उद्यमिताऔर आधुनिक उद्योगों के अनुकूल कौशलों का समावेश किया गया है, जिससे युवाओं को स्वावलंबन की राह पर बढ़ने का सशक्त माध्यम प्राप्त हो रहा है। ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों के युवाओं तक इन योजनाओं की पहुँच ने उन्हें न केवल आर्थिक रूप से सक्षम बनाया है, बल्कि अपने समुदायों के लिए प्रेरणास्त्रोत भी बनाया है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना :-

इस योजना की शुरुआत 2015 में युवाओं को उद्योगों की आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षित कर रोजगार के अवसरों से जोड़ने के उद्देश्यों से की गयी थी। यह योजना युवाओं को मुफ्त अल्पकालिक प्रशिक्षण उपलब्ध करवाने के साथ साथ प्रमाणन के लिए मौद्रिक प्रोत्साहन भी प्रदान करती है, जिससे उनकी रोजगार-क्षमता में वृद्धि हो सके। योजना के प्रायोगिक चरण(2015-16) में लगभग 19.85 लाख उम्मीदवारों को प्रशिक्षण दिया गया, जो इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। इस सफलता के आधार पर वर्ष 2016 से 2020 के बीच योजना को और अधिक विस्तार दिया गया। इसे भारत सरकार के अन्य प्रमुख अभियानों जैसे "मेक इन इंडिया", "डिजिटल इंडिया" और "स्वच्छ भारत" से समन्वित करते हुए लागू किया गया। इस चरण के लिए 12,000 करोड़ का बजट निर्धारित किया गया और इसे सामान्य लागत मानदंडों के अनुसार संरचित किया गया। इस विस्तारित चरण का उद्देश्य था कि बड़ी संख्या में युवाओं को उद्योगों द्वारा परिकल्पित उच्च गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण के लिए प्रेरित किया जाए, जिससे वे न केवल रोजगार पाने के योग्य बनें बल्कि आत्मनिर्भर होकर अपनी आजीविका भी चला सकें। इसके माध्यम से देश के मौजूदा कार्यबल की उत्पादकता में भी सुधार लाने की परिकल्पना की गई थी। साथ ही, प्रशिक्षण की प्रमाणन प्रक्रिया

को मानकीकृत करने और एक राष्ट्रीय कौशल रजिस्ट्री विकसित करने का आधार तैयार किया गया। इस योजना के अंतर्गत चार वर्षों में एक करोड़ युवाओं को लाभान्वित करने का लक्ष्य रखा गया, जिससे भारत के सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने में युवाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जा सके और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को मूर्त रूप दिया जा सके।

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना :-

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना की शुरुआत ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले युवाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें आजीविका के स्थायी साधनों से जोड़ने के उद्देश्य से की गई थी। यह योजना 25 सितंबर 2014 को अंत्योदय दिवस के अवसर पर ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा शुरू की गई थी। इसे राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन का एक अभिन्न हिस्सा बनाकर प्रस्तुत किया गया, जिससे न केवल ग्रामीण गरीब परिवारों की आय के स्रोतों में विविधता लाई जा सके, बल्कि युवाओं की करियर संबंधी आकांक्षाओं को भी मूर्त रूप दिया जा सके। यह योजना विशेष रूप से 15 से 35 वर्ष के आयु वर्ग के उन ग्रामीण युवाओं पर केंद्रित है जो सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े और वंचित परिवारों से आते हैं। इसका उद्देश्य उन्हें ऐसे कौशल प्रदान करना है जो उद्योगों की मांग के अनुरूप हों और उन्हें दीर्घकालिक रोजगार या स्वरोजगार के लिए सक्षम बना सकें। स्किल इंडिया अभियान के अंतर्गत यह योजना “मेक इन इंडिया”, “डिजिटल इंडिया”, “स्मार्ट सिटीज़”, “स्टार्ट-अप इंडिया” और “स्टैंड-अप इंडिया” जैसे राष्ट्रीय अभियानों को भी सहयोग प्रदान करती है। भारत की कुल युवा आबादी का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है, जिनमें से करोड़ों युवा गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन कर रहे हैं या सीमित रोजगार से जुड़े हैं। दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना ऐसे युवाओं के लिए एक अवसर प्रदान करती है जिससे वे न केवल अपने जीवन स्तर को सुधार सकें, बल्कि देश की आर्थिक प्रगति में भी सक्रिय भूमिका निभा सकें। यह योजना आत्मनिर्भरता, सम्मानजनक जीवन और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखी जाती है।

नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन :-

नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (NSDC) भारत के युवाओं को व्यापक कौशल विकास के माध्यम से सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसकी स्थापना 31 जुलाई 2008 को कंपनी अधिनियम 1956 की धारा 25 (अब कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 8 के अंतर्गत) के तहत एक गैर-लाभकारी सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी के रूप में की गई थी। यह एक अनूठा सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल है, जो कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (MSDE) के अंतर्गत संचालित होता है। इसमें 49% अंश भारत सरकार के पास और 51% अंश निजी क्षेत्र के पास है, जिससे यह संस्था देश के कौशल पारिस्थितिकी तंत्र की मुख्य वास्तुकार बन गई है। नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन उद्यमों, स्टार्ट-अप्स और विभिन्न संस्थाओं को वित्तीय सहायता, रियायती ऋण और अन्य अभिनव वित्तीय साधनों के माध्यम से सक्रिय रूप से समर्थन प्रदान करता है। इसका उद्देश्य व्यावसायिक प्रशिक्षण में निजी क्षेत्र की पहलों को प्रोत्साहित करना, उनका समन्वय करना और उन्हें सशक्त बनाना है ताकि आर्थिक संसाधनों की कमी किसी भी युवा के कौशल विकास में बाधा न बने। यह "स्किल इंडिया मिशन" का प्रमुख कार्यान्वयन और ज्ञान भागीदार भी है, जो भविष्योन्मुखी कौशलों के लिए प्रशिक्षण पहलों को विकसित करने पर केंद्रित है। नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन की रणनीतिक साझेदारियों और नवाचार आधारित मॉडल के माध्यम से ऐसा मजबूत कौशल पारिस्थितिकी तंत्र तैयार किया जा रहा है, जो न केवल वर्तमान उद्योग की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है बल्कि

भविष्य की प्रवृत्तियों को भी भांपते हुए युवाओं को प्रशिक्षित करता है। यह संस्था भारत के युवाओं को न केवल रोजगार के लिए तैयार करती है, बल्कि उन्हें राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय योगदान देने हेतु प्रेरित और समर्थ भी बनाती है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय समाज के अंतिम व्यक्ति को विकास की धारा में लाने की बात करते थे, जो आज कौशल विकास के माध्यम से मूर्त रूप ले रही है। उनका मानना था कि जब तक व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, बौधिक व आत्मिक विकास ना हो जाये तब तक राष्ट्र का उत्थान अधूरा है। यह दृष्टिकोण वर्तमान समय में नीतियों के मानवीयकरण की मांग करता है, जहाँ कौशल केवल नौकरी पाने का माध्यम न होकर, व्यक्ति के आत्मविकास और सामाजिक उत्थान का आधार बने। दीनदयाल उपाध्याय ने स्वदेशी, स्वावलंबन और सांस्कृतिक मूल्यों को विकास का अनिवार्य हिस्सा मना। उनका यह विश्वास था कि आर्थिक उन्नति और नैतिक मूल्यों का समन्वय ही राष्ट्र को वास्तविक रूप से समृद्ध बनाता है, आज आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। जब युवा केवल कुशल नहीं बल्कि नैतिक, सामाजिक रूप से उत्तरदायी और सांस्कृतिक रूप से जागरूक बनता है, तभी वह विकसित भारत की आत्मा को परिभाषित करता है।

निष्कर्ष :-

आज की कौशल विकास नीतियाँ न केवल वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही हैं, बल्कि भविष्य के भारत की नींव भी रख रही है। यह वह भारत होगा जो न केवल आर्थिक रूप से अग्रणी होगा, बल्कि सांस्कृतिक रूप से जागरूक, सामाजिक रूप से समरस और नैतिक रूप से सुदृढ़ भी होगा। दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानवदर्शन का मूल उद्देश्य व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के बीच संतुलन स्थापित करना है, जो केवल आर्थिक उन्नति नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक प्रगति को भी सामान रूप से महत्व देता है। आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना महज आर्थिक स्वतंत्रता का लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह भारतीयता की उस मूल आत्मा की पुनर्प्रतिष्ठा का प्रयास है, जिसे उपेक्षित कर पश्चिमी मॉडल अपनाए गए। आज भारत जब विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है, तब यह आवश्यक है कि विकास की परिभाषा केवल GDP, तकनीक या उत्पादन क्षमता तक सीमित न होकर, व्यक्ति निर्माण, ग्राम विकास, और सांस्कृतिक पुनर्जागरण को भी समाहित करे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने जो आत्मा-केन्द्रित विकास का दर्शन प्रस्तुत किया, वह आज के भारत के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। कौशल विकास का उद्देश्य केवल रोजगार सृजन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति को आत्मगौरव, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की भावना से भी परिपूर्ण करता है। जब कोई युवा किसी पारंपरिक या आधुनिक तकनीक को सीखता है, और उससे स्वयं को तथा समाज को लाभ पहुँचाता है, तब वह केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि एक सह-निर्माता बनता है। यही भावना आत्मनिर्भर भारत की नींव है। दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार, विकास केवल औद्योगिक नगरों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। यदि ग्रामीण भारत में स्थित लाखों गांवों को भी संसाधनों, शिक्षा और कौशल से जोड़ा जाए, तो भारत बिना किसी बाह्य सहायता के एक प्रबल राष्ट्र बन सकता है। एकात्म मानवदर्शन में "ग्राम केन्द्रित विकास" की जो अवधारणा है, वह कौशल विकास योजनाओं के माध्यम से ही साकार हो सकती है। आज प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, और स्टार्टअप इंडिया जैसी योजनाएँ उसी दिशा में उठाए गए महत्वपूर्ण कदम हैं। कौशल विकास की योजनाओं की सफलता तभी सुनिश्चित की जा सकती है जब उन्हें स्थानीय आवश्यकताओं और संस्कृति के साथ जोड़ा जाए। उदाहरण के लिए, किसी पर्वतीय क्षेत्र के युवाओं को बागवानी,

जैविक खेती या हस्तशिल्प जैसे स्थानीय कौशलों में प्रशिक्षित करना अधिक प्रभावी हो सकता है, बजाय केवल शहरी रोजगारों के लिए प्रशिक्षित करने के। दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद हमें यह सिखाता है कि व्यक्ति का निर्माण ही राष्ट्र निर्माण का मार्ग है, और व्यक्ति का सर्वांगीण निर्माण तभी संभव है जब उसमें कौशल, नैतिकता, और राष्ट्रीय चेतना का समन्वय हो। आज की शिक्षा प्रणाली को भी इस दिशा में पुनरावलोकन की आवश्यकता है। केवल डिग्री आधारित शिक्षा न होकर, रोजगारोन्मुखी, उद्यमशीलता आधारित और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समन्वित शिक्षा प्रणाली अपनाना ही आत्मनिर्भर भारत का आधार बन सकती है। आज भारत के सामने जो सबसे बड़ी चुनौतियाँ हैं वह है, बेरोजगारी, प्रवास, ग्रामीण-शहरी असंतुलन, आर्थिक विषमता आदि। इनका समाधान केवल आर्थिक निवेश से नहीं होगा। इनका समाधान तब निकलेगा जब कौशल विकास को एक व्यापक सामाजिक आंदोलन के रूप में अपनाया जाएगा।

वर्तमान केंद्र सरकार के प्रयासों से यह स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय के विचारों से प्रेरणा ली जा रही है। लोकल फॉर वोकल, स्किल इंडिया मिशन, आत्मनिर्भर भारत अभियान आदि केवल योजनाएँ नहीं हैं, बल्कि एक सांस्कृतिक नवजागरण का संकेत हैं। यह नवजागरण व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाकर समाज और राष्ट्र को समृद्ध बनाता है। भारत जब 2047 में अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण करेगा, तब वह केवल एक आर्थिक शक्ति नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक, नैतिक और वैचारिक शक्ति भी बनकर उभरे, इसके लिए आवश्यक है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को व्यवहार में उतारा जाए। उनके द्वारा प्रतिपादित चार आयाम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के संतुलन की अवधारणा, कौशल विकास के माध्यम से व्यक्ति को केवल भौतिक संसाधनों में सक्षम नहीं बनाती, बल्कि उसे अपने समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व का भी बोध कराती है। कौशल विकास केवल एक आर्थिक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक, नैतिक और वैचारिक आंदोलन है। इसकी जड़ें भारतीय जीवन दृष्टि में हैं और इसका उद्देश्य है एक समग्र, समवेत, और संवेदनशील भारत का निर्माण। यह भारत आत्मनिर्भर होगा, परन्तु आत्मकेन्द्रित नहीं, यह भारत समृद्ध होगा, परन्तु अपनी संस्कृति से कटे बिना, यह भारत विकसित होगा, परन्तु अपनी जड़ों से जुड़े हुए। इसलिए यह आवश्यक है कि कौशल विकास योजनाओं को केवल मंत्रालय बजट या सरकारी आंकड़ों तक सीमित न किया जाए, बल्कि इसे समाज की चेतना का हिस्सा बनाया जाए। विद्यालयों, महाविद्यालयों, पंचायतों, स्वयंसेवी संस्थाओं और धार्मिक संगठनों को भी इसमें सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। जब पूरा समाज कौशल के महत्व को समझेगा, तभी भारत एक सशक्त और विकसित राष्ट्र बन सकेगा। अंत में यही कहा जा सकता है कि यदि हम आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को वास्तविकता में बदलना चाहते हैं, तो हमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को आत्मसात कर, कौशल विकास को केवल नीति नहीं, बल्कि एक नैतिक कर्तव्य के रूप में अपनाना होगा। यही मार्ग भारत को न केवल आर्थिक दृष्टि से, बल्कि वैचारिक और सांस्कृतिक रूप से भी विश्व का पथ प्रदर्शक बनाएगा। इस प्रकार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों और कौशल विकास के समन्वय से आत्मनिर्भर भारत का मार्ग प्रशस्त होता है और यही मार्ग अंततः भारत को 2047 तक **"विकसित भारत"** के रूप में विश्वपटल पर प्रतिष्ठित करने में सहायक सिद्ध होगा।

संदर्भ:

1. उपाध्याय,दीनदयाल.(1958).भारतीय अर्थनीति:विकास की एक दिशा.लखनऊ:राष्ट्रधर्म प्रकाशन.
2. उपाध्याय,दीनदयाल.(2004).एकात्म मानववाद.दिल्ली.जागृति प्रकाशन.

3. उपाध्याय,दीनदयाल,(2014).राष्ट्र-चिंतन.लखनऊ.लोकहित प्रकाशन.
4. शर्मा, महेश चन्द्र.(2008).दीनदयाल उपाध्याय: कर्तृत्व एवं विचार.नई दिल्ली:प्रभात प्रकाशन.
5. शर्मा, महेश चन्द्र.(2016).दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खण्ड-3.नई दिल्ली:प्रभात प्रकाशन.
6. शर्मा, महेश चन्द्र.(2016).दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय खण्ड-5.नई दिल्ली:प्रभात प्रकाशन.
7. https://niti.gov.in/
8. https://www.msde.gov.in/
9. http://ddugky.info/
10. https://nsdcindia.org/
11. https://deendayalupadhyaya.org/